उपसंहार

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गद्य साहित्य में कथा साहित्य का खास महत्व है क्योंकि इस काल में कथा साहित्य में कई नूतन प्रवृत्तियों का श्रीगणेश हुआ था। स्वतन्त्र्योत्तर कालीन बदली राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों की असलियत तत्कालीन साहित्य जाहिर करता है। कस्बे के मध्यवर्ग परिवार के सदस्य होने के नाते कमलेश्वर स्वयं इन बदलावों के भोक्ता रहे हैं जिनका जीवन्त उद्‌घाटन अपने कथा साहित्य में कमलेश्वर ने किया है।

भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था के कारण देश की आर्थिक स्थिति भी खराब हो गई। नेताओं की स्वार्थता, योजनाओं के कागज़ों में ही बन्द होने की नीति, पूँजीवाद, शोषण आदि के कारण धनिक और अधिक धनिक एवं गरीब और अधिक गरीब होता गया। समाज एवं परिवार में व्याप्त अधिकांश समस्याओं की जडें आर्थिक असमानता और तज्जन्य आर्थिक अभाव ही है। स्वातन्त्रोत्तर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हुए भ्रष्टाचार, मूल्यविघटन, आदि का सफल अंकन करने में तत्कालीन कथाकार सक्षम निकले। नई कहानी के शिल्पी होने के नाते कमलेश्वर की रचनाएँ इस बदलाव को अत्यन्त सहज एवं यथार्थ- रूप में अंकित करने में सफल बन गई है। कमलेश्वर की ख्याति का मुख्य आधार उनकी कहानियाँ ही है। कमलेश्वर की संवेदनशीलता अपनी प्रारंभिक कहानियों में मानवीय सम्बन्धों को रूपायित करती है।

'गाय की चोरी', 'नौकरी पेशा', 'धूल उड़ जाती है', 'कस्बे का आदमी' आदि कहानियों में नैतिकता, त्याग, आदर्शवादिता और मानवतावाद के मूल्यों में आस्थावान चरित्र कमलेश्वर का प्रमुख लक्ष्य है। इन कहानियों में लेखकीय संवेदना, भावुकतामूलक आदर्शों की स्थापना का आग्रह चाहती है।

कमलेश्वर की कथायात्रा सामान्य व्यक्ति की आधुनिकता यात्रा है। क्योंकि कमलेश्वर की संवेदनशीलता का स्वरूप स्थिर नहीं है, बल्कि वह सदैव विकास की ओर गतिमान रही है। 'मुरदों की दुनियाँ ' में परिवर्तन के कारण जन्मी उन स्थितियों का संकेत है, जहाँ आधुनिकता का नया मूल्य परंपरा के विगत मूल्यों की बलि देकर प्रवेश करता है।

आधुनिकता की उपलब्धियों का स्वीकार कुछ कीमत माँगता है और यह कीमत करूणाजनक है, पीड़ाजनक है। 'गरमियों के दिन' में ये स्थिति और भी स्पष्ट एवम् पैनी बनी है। आधुनिकता के आगमन से आहत् प्राचीनता में जीवित रहने की करूण छटपटाहट 'गरमियों के दिन' का कथ्य है। वैद्यजी की त्रासदी का संकेत देनेवाली यह कहानी एक ओर नये जीवनमूल्यों के आगमन की सूचना दे रही है तो उसी वक्त खिसकती हुई प्राचीनता की पीड़ा को भी अभिव्यक्त करती है। कमलेश्वर का कलाकार इस पड़ाव पर प्राचीन और नवीन के बीच द्वन्द्व और उससे जन्मी संक्रान्ति की यातना को सहता हुआ कलाकार के सन्तुलित मानस का परिचय दे सका है।

युगसापेक्ष परिवर्तन की दुहाई देते हुए मानव के प्रति आस्था को सुरक्षित रखने का भाव कमलेश्वर के कलाकार व्यक्तित्व में एक नया आयाम जोड़ देता है।

अपनी कथायात्रा के तीसरे पड़ाव पर कमलेश्वर महानगरीय जीवन में व्यक्ति की परिणति को उद्‌घाटित करते हैं। दूसरे पड़ाव की कहानियों में परिवर्तन के आगमन का संकेत स्वाहतमयी मुद्रा में लेखक ने दिया है। लेकिन तीसरे पड़ाव की कहानियों में यह स्पष्ट होता है कि परिवर्तन की प्रक्रिया में यन्त्रकेन्द्रित संस्कृति विकसित हुई है और महानगर का यान्त्रिक - जीवन व्यक्ति के लिए अभिशाप बन गया है।

'खोयी हुई दिशाएँ', 'अजनबी' 'मैं' और 'दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में निकला' कहानियाँ इस पड़ाव की प्रतिनिधि कहानियाँ हैं। इन कहानियों के नायक ग्रामीण संस्कृति में संस्कारित हैं। वे महानगरों की यान्त्रिकता को और नगर- संस्कृति में पलते यान्त्रिक रिश्तों को स्वीकार नहीं कर पाते। भीड़ के बीच भी वे अपने को अकेला महसूस करते हैं और परिचितों के बीच उन्हें अजनबीपन का अहसास होता है।

'खोयी हुई दिशाएँ' में चन्दर की पीड़ा पर कहानी फोकस हुई है लेकिन 'अजनबी में ' यन्त्रीकरण की प्रक्रिया पर। 'मुरदो की दुनियाँ', और 'गरमियों के दिन' कहानियों में जिस परिवर्तन का लेखक स्वागत करना चाहता है वे परिवर्तन, महानगरों में यन्त्रिकरण के बढ़ते प्रभाव से अभिशप्त हो गए हैं। यन्त्रीकरण की इस प्रक्रिया को नियंत्रित करने के बजाय व्यक्ति स्वयं उससे नियन्त्रित होने लगा है। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे व्यक्ति की निजता को खत्म कर रही है।

'दूसरी सुबह सूरज परिचम में निकला' कहानी महानहर बोध को व्यक्ति की कोशिशों के स्तर पर उद्घाटित करती है। मशीनीकरण की बढ़ती प्रक्रिया में मानवी संबन्धों के संकेत भी मशीन के समान जड़ और निर्जीव होते जा रहे हैं। महानगरों की क्रूरता व्यक्ति के जीवन को भी प्रभावित करती है। इस कहानी में कमलेश्वर यान्त्रिकता के अभिशाप को चित्रित करके ही रूकते नहीं हैं, बल्कि चरित्रात्मकता के माध्यम से जीवन के प्रति मानवी आस्था का संकेत करते हैं।

इस प्रकार कमलेश्वर के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण आयाम पारम्परिक श्रद्धामूल्यों के प्रभावों में पैदा होकर आधुनिकता की उपलब्धियों और अभिशापों को स्वीकार करता हुआ सम्भावना पूर्ण जीवन मूल्यों के संकेतों में उभरता है।

कमलेश्वर के व्यक्तित्व का एक और महत्वपूर्ण आयाम उनकी मनोवैज्ञानिक कहानियों में उद्घाटित हुआ है। कमलेश्वर के कलाकार व्यक्तित्व का एक और आयाम है जो शोष आयामों से बिलकुल अलग और निराला है। उसकी प्रवृत्ति भी भिन्न है। उसकी 'आसक्ति', 'तलाश' 'या कुछ और' तथा 'अपना एकान्त' कहानियाँ व्यक्ति मन के आंतरयथार्थ को उद्घाटित करने वाली कहानियाँ है।

'आसक्ति' में कमलेश्वर ने विनोद और सुजाता के माध्यम से भाई बहन के बीच पनपती जटिल मनोवैज्ञानिक स्थितियों को व्यक्त किया है। जहाँ भाई- बहन सम्बन्ध- परिवर्तन के संदर्भ में न पनपकर स्त्री- पुरुष सम्बन्धों के बीच आकर्षण में उद्घाटित होते हैं। लेकिन सामाजिक नैतिकता के नीचे दोनों का आसक्ति भाव दबा रह

जाता है। इस सामाजिक नैतिकता के प्रति नकार की मुद्रा और आंतरयथार्थ का स्पष्ट उद्घाटन 'तलाश' की 'मम्मी' में हो सकता है।

'तलाश' की मम्मी सामाजिक दृष्टि से सुशिक्षित नौकरी करती विधवा स्त्री है और एक युवा बेटी की माँ भी। लेकिन कहानी में मम्मी के उस रूप का साक्षात्कार होता है जहाँ सामाजिक- परिवारिक नैतिकताओं के नियन्त्रण से परे उसकी विशुद्ध मनुष्यरूपी कामनाएँ व्यक्त होना चाहती हैं। लेकिन परम्परागत वर्जनाओं में हो नहीं पाती। भारतीय परिवार की नारी (माँ) के रूप में बेटी के विवाह की चिंता करने के स्थान पर वह अपनी कामनापूर्ति के प्रयासों में संलगन है। लेखकीय संवेदना नैतिकता - अनैतिकता के मानदण्डों से परे समाज- निरपेक्ष दृष्टिकोण से मम्मी के चरित्र का विश्लेषण प्रस्तुत करना चाहती है।

कमलेश्वर के भीतर लेखकीय संवेदना का चरम उत्कर्ष उनकी 'इतने अच्छे दिन' कहानी में मिलता है। यहाँ व्यक्ति के सम्मुख सामाजिक पारिवारिक नैतिकता अर्थहीन हो चुकी है और केवल एक सच्चाई उसके निकट सबसे बड़ा सत्य है। वह सच्चाई है - भूख की सच्चाई। आर्थिक संकट के सम्मुख नैतिक मूल्य और मानवीय मूल्य दोनों ही अपने अर्थ - और महत्व को खो चुके हैं।

कमलेश्वर के सर्वप्रथम प्रकाशित उपन्यास 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' से लेकर 'एक और चन्द्रकान्ता' (भाग -1, भाग - 2) तक में भी हमें उनके लेखकीय व्यक्तित्व का प्रकट स्वरूप देखने को मिलता है। 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' में

लेखक ने निम्नवर्गीय समाज के सामाजिक, आर्थिक औऱ वैयक्तिक जीवन का यथार्थ चित्रण प्रभावी ढंग से किया है। इस रचना के पात्र उत्तरी भारत से होकर भी भारत के किसी भी भाग का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम है।

विवाह के प्रति परम्परागत दृष्टिकोण निरर्थक हो गया है। विवाह को दो आत्माओं की पवित्र मिलन या जन्म- जन्मांतर का सम्बन्ध जैसी परम्परागत धारणाएँ क्षीण हो चुकी हैं। स्वाधीनता के बाद विवाह एक समझौता या मैत्री सम्बन्ध के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। इसी तरह का चित्रण कमलेश्वर ने 'डाक बगला' नामक उपन्यास में किया है।

कमलेश्वर के लेखकीय व्यक्तित्व का चरमोत्कर्ष भाव 'कितने पाकिस्तान' नामक उपन्यास में देखने को मिलता है। रोमांटिक भावबोध और शिक्तता बोध के विलक्षण वर्णन में समर्थ अमृता प्रीतम भी 'कितने पाकिस्तान' नामक औपन्यासिक कृत को बीसवीं शताब्दी की प्रतिनिधि कृति स्वीकारती हैं। उनकी स्वीकारोक्ति है कि अच्छी पुस्तक हर काल में सामने आती हैं, आती रहेंगी, लेकिन पुस्तक जिस मुकाम पर पहुँची है, वह हमेशा बनी रहेगी।

कमलेश्वर ने कथा शिल्प को नूतन बनाया है। उन्होंने अनुभव एवं अनुभूतियों के यथार्थ अभिव्यक्ति केलिए शिल्प के क्षेत्र में नये प्रयोग किए हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ और उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में रचित है। इसके साथ- साथ फैन्टसी

शैली, मिश्रित शैली आदि कई शैलियों का उपयोग किया। उनकी भाषा सरल और व्यंग्यात्मक भी है। कहानियों के शीर्षक भी उन्होंने बडे मनोयोग के साथ रखे हैं।

समग्रतः विचार करने पर यह स्पष्ट होगा कि कमलेश्वर आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य के संवेदनापक्ष और शिल्प पक्ष को नूतन प्रयोग से नितान्त गौरवशाली बनाने का सफल प्रयास किया है।

शोध छात्र के प्रकाशित आलेख की सूची

(1) 'संग्रथन' हिन्दी विद्यापीठ (केरल) की मुख- पत्रिका

मुख्य संपादक - डॉ. वी. वी. विश्वम,

हिन्दी विद्यापीठ,

जगती, तिरुवनन्तपुरम,

सं. नवंबर - 2010.

'कमलेश्वर के उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में प्रतिफलित साम्राज्यवाद',पृ.18-21.

(2) 'केरल ज्योति' केरल हिन्दी प्रचार सभा की मुख-पत्रिका

मुख्य संपादक - डॉ. एम. एस. राधाकृष्ण पिल्लै,

केरल हिन्दी प्रचार सभा,

तिरुवनन्तपुरम,

सं. सितंबर - 2010.

'कमलेश्वर के उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में प्रतिफलित फासीवाद', पृ.19-20.